A COMPILATION OF SOURCES COVERING THE HISTORY OF ADHRAJIYA SINGH TIWARIS OF VINDHYA



'गहोरा' में बघेल राज्य की स्थापना–भीमलदेव

तेरहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध [41] में व्याघ्रपल्ली के चालुक्यों (बघेलों) की एक शाखा यमुना के दक्षिण मड़फा–कालिंजर पहुँची जैसा कि रीवा के महत्वपूर्ण स्थानीय अभिलेख 'एकत्रा बाधोगढ़' [42] से मालूम होता है कि वीसलदेव [43] और भीमलदेव नामक दो बघेल भाईयों का भाग्य उन्हें गुजरात से कालिंजर खीचं लाया, जहाँ वे 'भर' राजा की सेवा में लग गए। कुछ समय बाद इन्होने भर राजा के पक्ष से कांलिजर के समीप में स्थित 'गहोरा राज्य' को प्राप्त करने के लिए वहाँ के लोधी जमींदार के दीवान (मंत्री) तिवारी (वर्तमान में इनके वंशज अधरजिया तिवारी कहे जाते हैं, को मिलाकर गहोरा राज्य को आधा–आधा बांट लेने का षडयन्त्र किया[44]। इस षड़यंत्र के अनुसार लोधी जमींदार को मारकर गहोरा विजित करके कालिंजर राज्य में शामिल कर लिया गया। इस विजय के परिणामस्वरूप भीमलदेव को कालिंजर राज्य की ओर से 'गहोरा की जागीर' और ठाकुर का पद मिला[45] ।

भीमलदेव एक विद्वान, बुद्धिमान, धार्मिक और युद्ध प्रिय व्यक्ति था। इसका पुत्र रानिंगदेव (अनीकदेव) हुआ जिसने अनेक महलों से गहोरा को सजाकर उसे अपनी राजधानी बनाया [46] । इससे यह संभव है कि भीमलदेव के

VINDHYANCHAL KE BHAGHEL RAJYA BY SUSHEEL KUMAR DUBEY

भीम के पुत्र राणिङ्गदेव को गहोरा का प्रथम अधिकारी बतलाया गया है।[१] जमाबन्दियों के अनुसार वीसल और भीम [अन्यत्र विसाल देव, भीमल देव, भीममल्ल आदि] दो भाई कालिंजर के भर-वंशीय शासकों के सैनिक बने। इस समय गहोरा में लोधियों का शासन था। भीम ने लोधियों के मन्त्री तिवारी ब्राह्मण को आधा राज्य देने की लालच देकर फोड़ लिया और लोधी शासक को मार कर गहोरा को जीता तथा उसे कालिंजर में सम्मिलित कर लिया।[२] सम्भवतः राणिङ्गदेव प्रथम व्यक्ति था, जो गहोरा में स्वतंत्र रूप से बस गया। रीवा की परम्परा के अनुसार बघेल राजकुमार यज्ञोपवीत संस्कार के समय गहोरा राज मांगा करता है।[३] सम्भवतः बघेलों के हाथ से गहोरा को अन्तिम रूप से छत्रसाल बुन्देले ने छीना। मुस्लिम लेखों में बघेल राज्य का नाम भाठ गहोरा मिलता है।[४] १५६६ ई० में जब कालिंजर रामचन्द्र बघेल के हाथ

बघेलवंशवर्णनम् में वीसलदेव को कालिंजर के भर-वंशियों का सेवक बतलाया गया है। तथा भीममल्ल उसका पुत्र है।[1] जमाबन्दियों में ये दोनों भाई-भाई हैं और कालिंजर के भर राजा के चाकर (सेवक) होते हैं। कहीं भर राजा का नाम भी वीसलदेव है। इन भाइयों को गहोरा की जागीर और ठाकुर का पद मिलता है और भीममल्ल (या भीममल या भीमल) गहोरा के लोधी शासक के मन्त्री तिवारी को फोड़कर गहोरा पर अधिकार कर लेते हैं।[2] वीरभानूदय में इसी भीम (नरेन्द्र) से वंशारम्भ होता है तथा उनके पुत्र रानिङ्गदेव के साथ गहोरा शासन का पहली बार उल्लेख होता है।[3] बघेलवंशवर्णनम् तथा जमाबन्दियों में भीम के पुत्र का रानिकदेव एवं चारणों के लेखों में अनोकदेव नाम मिलता

[३७७]

कालिंजर आइ भर राजा वीसलदेव के चाकर भें। गहोरा जागीर पाइन। तिवारी मिलाइ कै आधा राज देइ काहीं हाँसा। लोधिन का मारिनि। गहोरा अमल भा। गहोरा रहे पुरिया ७, विसालदेव, भीममलदेव, रनिकदेव, बलनदेव, दलकेश्वरदेव, मलकेश्वरदेव, वरियारदेव।

बोलारदेव पठानन मारा। अंत्रवेद अमल भा। पातसाह का कोनी छगाइ तरिहार सहिजना ते रानी भइई भरि सब लीन्हेंनि। गहरवारन का देस सुहावडेरा पातसाह दीन राजा भें गहोरा में। बोलारदेव ते राजा भें। पठान पातसाह राजा कीन्ह।

२. परि० १ (क): 'कालिंजर हिया दुइ भाई भर राजा के चाकर भे। वीसलदेव जेठे भीममल लहुरे गहोरहि आएँ।...... ...भीममलदेव गहोरा के लोधिन कहँ मारि के गहोरा छँड़ाइ लीन्हेनि।'

परि १ (ख): 'कालिंजर आइ दुइ भाई भर राजा वीसल देव के चाकर भें। गहोरा जागीरि पाइनि। ठाकुर कै खिताब पाइनि। लोधिन का मारिन। गहोरा अमल भा।'

परि १ (ग): '...तिवारी मिलाइ कै आधा राज देइ काहीं हाँसा। लोधिन का मारिनि।'

१. घोर० १११० : 'लब्ध्वा गहोराम् ।'

२. एकत्रा छपा अन्य (परि० १ क, ग) ।

३. घोर० क्रि० ए० पृष्ठ २३-२४ ।

४. मिनहाजुद्दीन (१२६० ई० के निकट) :
तबकात-नासिरी (रैवर्टी), पृ० ७४३ :
'आठ-गहोर,' जिसका केन्द्र कालिजर था कमरुद्दीन द्वारा १२४३ ई० में लूटा गया ।'

BAGHELKHAND KE SANSKRIT KAVYA BY DR RAJEEVLOCHAN AGNIHOTRI
(INCLUDING THE PRIMARY SOURCES)

International Journal of Advanced Educational Research

International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 4; July 2018; Page No. 17-25

बघेलखण्ड में बघेलों का अभ्यूदय एवं विकास का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ० नृपेन्द्र सिंह परिहार
प्राचार्य, डी० आर० एस० बी०एड० कालेज, गंगापुर, जिला रीवां, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
इस शोध पत्र में ''रीवा स्टेट गजेटियर'' को मूल आधार स्रोत मानते हुए बघेल वंश के अभ्युदय एवं विकास का विश्लेषण कर रहे हैं। कर्णदेव बघेल दक्षिण में देवगिरि भाग गया था। ऐसी ही भगदड़ में इस बघेल राजवंश के दो भ्राता वहाँ से पलायन कर विन्ध्य श्रृंखला से गुजरते हुए मध्य पूर्व विन्ध्य में आश्रय लिया हो तो कोई अत्युक्ति नहीं है। अपनी इस दयनीय स्थिति में इन बघेलों ने भर शासकों की सेवा ग्रहण कर ली थी और शक्ति संचय करने पर गहोरा के अधिपति बन गये थे।
लोधियों की सम्पूर्ण सेना तिवारियों के आधिपत्य में थी। एक दिन जब लोधियों के यहाँ कोई महोत्सव हो रहा था और वे सब मदिरा पीकर उन्मत्त थे, उसी समय उनकी ही सेना लेकर इन्होंने चढ़ाई कर दी और विजय प्राप्त की। इसके पश्चात् महाराज व्याघ्रदेव ने तिवारियों को आधा राज्य देना चाहा, जिसे इन लोगों ने स्वीकार नहीं किया। तब महाराज ने तिवारियों को ''अधरजिया तिवारी'' की पदवी प्रदान की। उसी दिन से रीवा राज्य के तिवारी ''अधरजिया'' कहलाने लगे।
महाराज विक्रमादित्य ने राज–प्रसाद और अन्य दूसरे भवन इस प्रकार बनवाये कि साधारण संरक्षित ग्राम से परिवर्तित होकर यह नगर एक बड़े राज्य की राजधानी बनने के योग्य निर्मित हो गया। महाराज विक्रमादित्य के आने से पूर्व सन् 1554 में यहाँ एक बस्ती का निर्माण शेरशाह सूरी के पुत्र जलाल खाँ (सलीमशाह) के द्वारा कराया गया था। अपने पिता की मृत्यु का समाचार पाकर जलाल खाँ यहीं से कालिंजर गया था और उसके पश्चात् सलीमशाह के नाम से दिल्ली के सिंघासन पर बैठा था। जलाल खाँ ने यहाँ पड़ाव के दौरान बीहर–बिछिया के संगम स्थल के किनारे किले की नींव डाली थी।

मूल शब्द : बघेलखण्ड, अभ्यूदय, विकास, समीक्षात्मक अध्ययन, मरफा, अधरजिया।

प्रस्तावना
बघेलखण्ड में बघेलों की सत्ता की स्थापना का श्रेय गुजरात के सोलंकी राजवंश के वीर धवल के पुत्र 'बाघराव' को है, जिन्हें व्याघ्रदेव कहा जाता है। कुछ इतिहासकार व्याघ्रदेव को बघेलखण्ड में बघेलों का मूल पुरुष स्वीकार नहीं करते हैं। किन्तु ''वीरभानूदय काव्यम'' में व्याघ्रपाद मुनि को बघेलों का मूल पुरुष निरूपित किया गया है। रीवा स्टेट गजेटियर (1907, पृष्ठ 12), आर्किलॉजिकल सर्वे रिपोर्ट (क्रं. XXI, पृष्ठ 104) रीवा राज्य दर्पण (जीतन सिंह), रीवा राज्य का इतिहास (रघुवर प्रसाद), व्याघ्र वंशावली (उर्दू), रीवा राज्य का इतिहास (गुरु राम प्यारे अग्निहोत्री) आदि ग्रन्थों में बघेलों का आदि पुरुष व्याघ्रदेव को माना गया है। हीरानन्द शास्त्री ने कर्णदेव गुजरात का कर्णदेव बघेल (कर्णबघेला) था, जो गुजरात में उत्पन्न हुआ था और सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी का समकालिक था। इसी कर्णदेव बघेल के समय में (1299 ई.) खिलजी सेनाओं ने गुजरात पर आक्रमण किया था। इस मुस्लिम आक्रमण में गुजरात को लूटा एवं ध्वंस किया गया था।

1. व्याघ्रदेव बघेलखण्ड में ''बघेल राज्य'' स्थापित होने के पूर्व गुजरात में बघेलों की सार्वभौम्य सत्ता स्थापित हो चुकी थी, जिनकी राजधानी ''अन्हिलवाड़ा'' थी। बघेल क्षत्रिय चालुक्यों की एक शाखा है, जिन्होंने दक्षिण भारत के चालुक्य क्षत्रियों की एक शाखा के रूप में गुजरात पहुँचकर 960ई. में अन्हिलवाड़ा में सोलंकियों का राज्य

तीर्थ यात्रा के लिए चल पड़े थे। इन्होंने गहौरा पर कब्जा कर लिया और कालिंजर गढ़ के किले में रहकर वहाँ राज्य करने लगे। कुछ समय बीतने पर उनसे तिवारियों, से जो लोधियों के मंत्री थे, मित्रता हो गई। उन्होंने तिवारियों से कहा कि यदि "डहार" राज्य में आप हमारा अधिकार करा दें तो आपको आधा राज्य मैं बांट दूँगा। आप मेरे गुरु और कुल पूज्य हैं; अस्तु आप हमारी सहायता कीजिए। इस तरह व्याघ्रदेव और तिवारियों के बीच मंत्रणा हुई।

BAGHELKHAND ME BAGHELO KA ABHUDAY EVAM VIKAS KA SAMIKSHATMAK ADHYAYAN BY DR NRIPENDRA SINGH PARIHAR

Brahmans would have been among the foremost colonizers of Baghelkhand, laying the basis for their later dominance of regional society.[15] They were to be found among the earliest sages and hermits who meditated and did penance in forest retreats. In time ashrams developed further, staffed by Brahmans who served their apprenticeship as teachers, tended their cattle, mastered the *Vedas*, and obeyed a senior teacher, to finally emerge as full initiates. Ashrams may also have housed people seeking a simple life away from the urban distractions of the north, settling near others already living in the area as farmers.[16]

Later Brahman migrants carried the process of colonization and nationalization further, organizing village settlements and building temples. With their monopoly of religious rites and their role

As we have seen, other dominant groups settled in Baghelkhand long before the Baghels. Of these the most prestigious were the Brahmans.[55] Owners of land from early times, the Baghels also bestowed land on them; and by 1800 their Kanyakubja and Sarwaria sub-castes were mainly located on the Rewa plateau, and formed

rajya', PhD, p. 117. Between 1881–6 officials noted that there were 6416 populated villages in Rewa. Of these 1432 were *kothar* villages; 2174 were on *ilaqadari* estates; 669 villages paid *chauth*; 167 were rent-free; 138 were in *jagirs* of maharanis and widows; 35 were in possession of the widows of Madhogarh estate; 121 villages supported temples; 269 were held by *jagirdars* in lieu of cash payments; and 1441 were rent-free in perpetuity, mostly held by Brahmans (Barr, *Administration of Rewah*, p. 70).

second tier forming the core of the state's nobility. These *ilaqadars* or *sardars*, as they were called, held the granted *jagirs*, and in return were obliged to support the raja in war, pay homage, and contribute to state finances. Rulers also confirmed a number of Chauhan, Chandel, and other pre-existing holders in their lands in return for submission to Baghel rule. These lineage and granted lands became dotted with villages, many springing from the parent settlement, to form an interlocking mesh of villages on an estate. At this third level kings and nobles parcelled out villages to Rajputs, Brahmans, and others in return for services rendered. Despite the

> look upon themselves not simply as vassals of a feudal lord, but as joint occupiers and co-parceners with their Chief in the family lands, and behind the admitted right of the chief to homage, support in war, and obedience, lies the tacit understanding that the control he exercises is limited, and any overstepping of this limit is to be resisted.[14]

The rajas of Rewa were thus 'primus inter pares'. At times Baghel princes or collaterals carved out territory for themselves, and thus did not owe the raja the support and obedience demanded of grantees. Also, many of the pre-Baghel landowners unwillingly supported a raj that had proved too strong for them and sought any opportunity to defy its edicts.[15]

Besides their Baghel base, the kings of Rewa benefited from their alliance with Brahmans, cemented by bestowing them with village lands.[16] Chiefs regarded themselves as the protectors of Brahmans, and Brahmans in turn recognized the Baghels as kshatriyas and the rightful rulers of the realm. The Brahmans of

The tempo of revolt in Baghelkhand gathered momentum in the remaining months of 1857.[31] The country south of Maihar was particularly disturbed as the Nagpur 52nd Native Infantry passed through it bound for Banda. In early November the Raja of Vijayaraghogarh came to the revolt, killing the *tahsildar* and other officials. Events began to move in Sohagpur, too. Following contact with rebels in Rewa, in December revolutionaries there invited like-minded people in Raipur to join them. At the same time, the Rewa Army was reportedly divided in its loyalties, and refused to move beyond Mangawan in pursuit of rebels. At this critical point British forces en route to Rewa were recalled to defend Kanpur, while news of the fall of Delhi buoyed the rebel cause everywhere.

Disturbances in Baghelkhand continued on into 1858.[32] In May an *ubaridar* of Nagod garrisoned the fort there; by July Rewa rebels rallied in Panna, aided by the chiefs of Jaso and Kothi. Surju Prasad of Vijayaraghogarh massed troops in the hills bordering Maihar in September, and in November rebels from Jagdishpur in Bihar entered Bardi. Rumour also had it that the Sohagpur rebels were planning to attack Sambalpur. By November, too, rebels south of the Narmada were preparing to march for Maihar and the north.

BAGHELKHAND, OR, THE TIGERS' LAIR: REGION AND NATION IN INDIAN HISTORY
BY D.E.U. BAKER

nerved up wards of thirty years in the State was nominated to the council he devoted the whole of his time to the work and has under taken the duties of secretary."

मौ० रहमान अली को ख़ान बहादुर का ख़ेताब – मौ० रहमान अली की ईमानदारी से इंगलिश हुकुमत भी बहुत मोत्तासिर थी क्योंकि वलवा (1857 ई.) के दौरान अच्छा काम किया और गवरमेन्ट इण्डिया में लड़ी फौज के साथ रहे। 17 फरवरी 1887 को गवरमेन्ट गजट इण्डिया में छपकर मशाहिर हुआ कि मौलवी रहमान खॉं को बतकरीब जुबली गवरनर जरल बहादुर के हुजूर से खेताब खान बहादुर अता हुआ है। 22 अप्रैल सन् 1887 को जुमे के दिन पोलिटिकल एजेन्ट मेजर बार ने ब मकाम रीवा बंगला स्कूल में दर्बार आम मुन अकिद किया गया, जिसमें जुमला सर्दारान व बेरादरान खानदान रेयासत नायब दीवान पं. हेतराम मौजूद थे। उसमें गवरनर जनरल की जानिब से एक अदद जोब नुकरा व चोबदार इनायत फर्माई गई और उसी वक्त से उन्हें खान बहादुर कहा जाने लगा।[1]

मौ० रहमान अली द्वारा हनुमान सिंह तिवारी की गिरफ्तारी – मौ० रहमान अली सन् 1878 ई. में ओहदा मजिस्टेटी में सरफराज रहे व इंचार्ज डिप्टी मजिस्टेट भी रहे। उसी दौरान हनुमान सिंह तिवारी (अधरजिया) साकिन बछरा पर एक मुकदमा तहकीर अदालत दीवानी का महकमा डिप्टी मजिस्टेटी में दायर हुआ। हनुमान सिंह मजकूर की तलबी कई मर्तबः अदालत फौजदारी से हुई। वह हाजिर नहीं होता ब तारीख 16 जुलाई सन् 1878 को उसको बर्कन्दाजान कोतवाली रीवां ने गिरफ्तार करके रू–बरू मजिस्ट्रेट के हाजिर किया। मजिस्ट्रेट ने बाद तहरीर इजहार के हुक्म दिया कि मुद्दालेह जमानत हाजिरी दाखिल करे, वर्ना हवालात किया जावे। उसने ब राह शरारत जिबिल्ली जमानत दाखिल नहीं की। इसलिएं हवालात में भेजा गया। कौम तिवारी जो इस रेयासत में सरकश और शोरा पुश्त मशहूर है। इस कार्यवाही को वाइस अपनी हतक का ख्याल करके मुत्तफिक हुए कि मजिस्ट्रेट पर हमला किया जावे। देहात से अपने रिश्तेदार और हम कौमों को इकट्ठा किया। 19 जुलाई 1878 को उनका इरादा फासिद जाहिर हुआ तो रहमान अली जो उस वक्त ओहदा मजिस्ट्रेटी पर सरफराज थे अपने दर्वाजे का बन्दोवस्त बजरिये अपने हम मजहब मुसलमानो के कर लिया। महाराजा साहब (रघुराज सिंह) ने यह खबर सुनकर लाल रामानुज प्रसाद सिंह कमान्डर इन चीफ और सर्दार भगवत सिंह और उमराव लखन सिंह और लाल कल्यान सिंह व दीगर सर्दारान को वास्ते इन्सदाद शर तिवारियान के मौलवी साहब के मकान के लिए रवाना फर्माया। पं० हेतराम नायब दीवान, लाल राम सिंह व दीगर हमराहियान के तशरीफ लाये। स्वामी ख्याली दास (लक्ष्मी प्रपन्नाचार्य लक्ष्मण बाग के महन्त) ने करीब 60 चेलों के बहमराही कुंज बिहारी लाल के भेज दी। मौलवी साहब के घर में भारी भीड़ जमा हो गई। अलावा इसके सवारान रिसाला, जंगी व तिलंगान पलटन का पहरा हरचहार तरफ हवेली के और

1. मौ० रहमान अली, वही, पृ० 599, 601, 604.

नाके जात पर हो गया। गरज तिवारियों की हिम्मत न पड़ी कि वह अपना इरादा पूरा करे। मुन्तजिम आला बैनरमैन ने दलगंजन सिंह तिवारी को जागीर जो इस फसाद में सरगना समझा गया था कुर्क कर दी। बहुत दिनों के बाद जब उन लोगों ने एकरार किया कि बार दीगर ऐसे इरादे का हौसला न करेंगे, तब जागीर के बहाली का हुक्म हुआ।[1]

मस्जिद का स्थापत्य – घोघर स्थित इस मस्जिद की तामीर 1860–61 ई. में हुई। दर असल मौ0 साहब के भाई अमान अली खाँ मुन्तजिम परमट का इन्तकाल 10 अक्टूबर 1860 को हुआ। उसी दौरान अपने भाई मरहूम के सिरहाने (कब्र के पास) ब मकाम रीवा में मस्जिद तामीर कराई।[2] उत्तर–दक्षिण लम्बवत इस मस्जिद का सामना पूरब दिशा की ओर है। मस्जिद के भीतर प्रवेश के लिए अलंकरण युक्त शाहजहानी शैली की मेहराबों से आच्छादित पांच दरवाजे हैं। इसका मुख्य दरवाजा 3'–6'' X 6'–10'' का है। इसके दोनो ओर फलकीय गोलाकार पाषाण स्तम्भ है, जिसके मेहराब में पुष्प पत्तिकाओं का अलंकरण विद्यमान है। इस तरह का अलंकरण प्रायः बघेलखण्ड की मंदिरों में देखने को मिलता है। मस्जिद के भीतर का अलंकरण भी काफी खूबसूरत है। मस्जिद भीतर से 33'–5'' X 9'–6'' की है। इसके भीतर छत को छूती हुई तुर्क शैली की डाटदार मेहराबें है।[3] इसके चारो ओर पान पत्तिकाओं से अलंकरित पटि्टकाएं विद्यमान है। मस्जिद में पेश ईमाम के लिए 3'–6'' X 3' का शाहजहानी शैली के कटावदार मेहराब से आच्छादित मीमबार है,[4] जिसमें भारतीय शैली के पुष्प पत्तिकाओं का अलंकरण विद्यमान है। पेश ईमाम के खुतबे के लिए 2'–1'' X 1'–8'' का उसी कटावदार मेहराब से आच्छादित छोटा मीमबार है। इसकी मेहराब पर फारसी में खलीफाओं का नाम अंकित है।

मस्जिद के ऊपर मुगल शैली के तीन गुम्बद है, जो अमहिया स्थित बड़ी दरगाह मस्जिद के गुम्बद से प्रभावित है। गुम्बद की वेकि नागफनी से निकलती है, जिसमें आमलक, कलश विद्यमान है। मस्जिद के दोनो किनारो में नीचे से लगभग 35' ऊंची मीनारें गई हुई है। पीछे की मीनारें छोटी है। इस प्रस्तर मस्जिद का स्थापत्य मुगल एवं राजपुताना शैली से प्रभावित है। मौ0 रहमान अली को पैपखरा के ब एवज मौजा जिगना देह माफी अता हुआ था, जिसकी सालाना आमदनी मस्जिद के मसारिफ (तनख्वाह) भिश्ती, माआज्जिन, ईमाम व रौशन चिराग में लगा दी गई।[5] इस मस्जिद में वर्तमान में भी पांचो वक्त की नमाजें अदा की जाती हैं। इस मस्जिद के चारो ओर मुस्लिम बाहुल्य आबादी वाली बस्ती है।[6]

---

1. मौ0 रहमान अली, वही, पृ0 219–220, 222.
2. मौ0 रहमान अली, वही, पृ0 172, 596.

BAGHELKHAND KI STAPATHYA KATHA BY ASAD KHAN (ACCOUNTS FROM TWARIKH-E- BAGHELKHAND BY MAULVI REHMAN ALI)

The fourteenth century stood as a period of considerable upheaval in the history of India, and in the Vindhyanchal region in particular. The imperial Chandels of Jejakabhuti, who had long held sway over the area, entered a period of terminal decline during the first half of this century. Hammirvarman is recorded as the last substantial ruler of this line. His passing marked the collapse of central Chandela authority, a collapse that occurred amid the growing expansion of the Delhi Sultanate and the corresponding rise of local dynasties and tribal groups, among them the Bhars and the Lodhis, who began asserting their own influence over the vacated territories.

At the close of the thirteenth century and the beginning of the fourteenth, in the years 1299 and 1304, Alauddin Khilji led invasions into Gujarat. These campaigns brought an end to the reign of the Vaghelas of Gujarat, with Karna II standing as the last king of that line. The disruption caused by this conquest set in motion a migration of the Vaghelas eastward, toward the region that is now Madhya Pradesh.

Among those who made this journey were two members of the Vaghela family, named Bheemal, also called Bheem Deo, and Bisal Deo. Upon their arrival in the region, they are said to have met with the Bhar raja, who appealed to them for assistance in subduing the chieftains who held power over Gahora. The Diwan and Senapati of Gahora at that time was Pradyuman Prasad Tiwari. Bhimal Deo approached him, and the two entered into an alliance that resulted in the orchestration of a coup against the rulers of Gahora. Following the successful siege, it was agreed that the conquered territory would be divided equally between the two men. Yet Diwan Pradyuman Prasad Tiwari chose to

more independent, more respected and more feared than any other section of society. During the late Maharaja's lifetime, the Brahmans attained an ascendancy which was positively dangerous to the welfare of the State. Besides obtaining grants of immense areas of land on rent-free tenure, they usurped all the high offices; they obtained the right to levy dues from the people, and were themselves above the law. No Brahman convicted of murder had ever suffered the penalty of death; their immunity in this respect alone made them a law unto themselves, and it was truly said of Rewah that the State was ruled by Brahmans.

relinquish his half of the territory in favor of Bhimal Deo, continuing with the positions of prime minister and head of the army. In recognition of this generosity, Bhimal Deo bestowed upon him the titles of Adhrajiya, meaning ruler of half the territory, and Singh, thereby styling him as Adhrajiya Raja Shree Pradyuman Singh Tiwari, a title that would carry forward through the generations of his line.

among the Adhrajiya line was Adhrajiya Raja Shree Raghunandan Ram Singh Tiwari, who held the rank of a tazimi sardar and stood as the ninth generation descendant of Adhrajiya Raja Pradyuman Singh Tiwari. When the capital was moved to Rewa, he was granted an estate, known as a pawaidari, comprising sixty two villages. Within the state of Rewa, forty

37.	पथरेही	128	10840	2028
38.	बैकुण्ठपुर हरौल नर्वदाप्रसाद सिंह	8	11907	2084

j – चिन्ह वाले इलाके कोर्ट आफ वार थे ।

ताजिमी सरदार –

1. लालचन्द्रशेखर सिंह – रामपुर बघेलान
2. जगन्नाथ सिंह – हर्दी
3. माधव सिंह – सिजहटा
4. कर्न. बलवंत सिंह – देवरा
5. बटुक प्रताप सिंह – रायपुर
6. भारत शरण सिंह – घौंचट
7. कर्न. शेख समरुद्दीन – चौरा
8. कर्नल लाल गोपाल सिंह– कैथा
9. चन्दौल सरदार कामता सिंह – रामगढ़
10. सरदार इन्द्रदेव सिंह – रामपुर
11. गंगा प्रसाद तिवारी –जयपुर
12. लाल राजेश्वरी प्रसाद सिंह– बड़ा गांव
13. लाल जादेश्वरी प्रसाद सिंह – घूमन
14. पं.महादेव विष्णुकान्त – रीवा
15. डॉ. राम प्रसाद –रीवां
16. कु. लाल रामपाल सिंह – बल कठहा

History

See also: Rewa State



Delhi Durbar of 1903, held to commemorate the coronation of King Edward VII and Queen Alexandra as Emperor and Empress of India: Elephant Carriage of the Maharaja of Rewa at the Retainers' Review, 7 January 1903

The district of Rewa derives its name from the town of Rewa, the district headquarters, which is another name for the Narmada River.[5]

Present day Rewa was part of the Baghelkhand region which expanded from the present day Prayagraj in the North to Ratanpur in the South, Jabalpur in the West to Surajpur in the East.

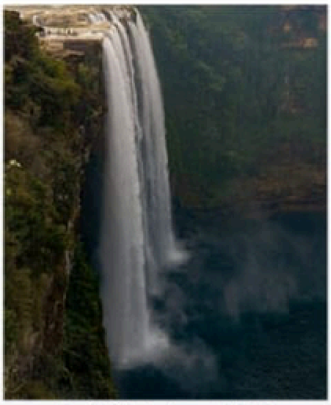
Baghel Dynasty

Baghel Dynasty was founded by Bhimaldev (son of Vyaghradev, the chieftain of Vyaghrapalli) in 1236 CE.[6][*unreliable source?*] Baghelas are basically Chalukyans of Anhilwara (Gujarat).

The region was earlier governed by Lodhi Rajputs and Sengar chieftains of Rajgond Dynasty. Lodhi's Diwan Tiwari conspired with Baghelas and assisted in foundation of Baghela Rule in the Gahora Patti region. In return of this favour, Baghelas granted title of "Singh Tiwari" or "Adhrajiya Tiwari" to the Diwan Tiwari.

Raja Ramchandra shifted capital to Bandhavgarh, and later Raja Vikramjit Singh shifted capital to Rewa in 1605 CE.

Bandhavgarh Fort was sieged by Mughals. Tansen and Birbal (Mahesh Das) were in court of Ramchandra Singh Baghel.



Keoti falls in Rewa district



Show map of Madhya Pradesh
Show map of India
Show both

Coordinates: 24°32′17″N 81°17′43″E

Country	India
State	Madhya Pradesh
District	Rewa
Founded by	Vikramaditya Singh
Government	
• **Type**	Municipal Corporation
• **Body**	Rewa Municipal Corporation
Area[1]	
• **City**	69 km^2 (27 sq mi)

Sex ratio	900 *(females per 1000 males)*

Society

The region is home to Kol Tribes of Madhya Pradesh. Rewa Riyasat had given royal patronage to three Brahmins, today known as Tiwari, Mishra and Dubey (Parauha). These three formed closed matrimonial alliances.

Tiwari had assisted Vyaghra Singh Deo Baghel and his sons to orchestrate Coup d'état of Lodhis and ascend the throne of Rewa Estate. In return of the favor, Tiwari and his successors called "Adhrajiya Tiwari" with title of "Singh Tiwari". The other known Tiwari clans are - Tiwani, Hanna etc.

Mishras belong to four clans - Amanv (Chakghat), Anjora (Teonthar), Umapur (Prayagraj) and Tudihar (Mirzapur). Last brahmin to receive royal patronage was - Parauha, which used title Dubey or Dwivedi. Some other major Brahmin clans of Rewa are - Upadhyaya , Shukla, Gautam, Garg, Pandey, Tripathi etc.